International Journal in Management and Social Science
Volume 14 Issue 03, March 2026 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

अहिंसा और सत्याग्रह का भारतीय जनमानस पर प्रभाव : वर्तमान समय में प्रासंगिकता

Raviranjan, U.G.C.NET Qualified,
M.C.A.,M.A. History, L.N.M.U.Darbhanga, Bihar

शोध सारांश

अहिंसा और सत्याग्रह केवल दो दार्शनिक शब्द नहीं हैं, बल्कि यह मानव चेतना के क्रमिक विकास और नैतिक शक्ति के सर्वोच्च शिखर हैं। भारतीय संस्कृति और दर्शन में श्अहिंसा परमो धर्मः श का विचार सदियों पुराना है, जिसे जैन, बौद्ध, उपनिषद और सनातन परंपरा ने निरंतर पोषित किया [1] परंतु, बीसवीं शताब्दी से पूर्व तक अहिंसा को मुख्य रूप से एक व्यक्तिगत गुण, धार्मिक आचरण या मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में ही देखा जाता था। इतिहास में मोहनदास करमचंद गांधी वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इन आध्यात्मिक और व्यक्तिगत सिद्धांतों को सामूहिक, राजनैतिक और सामाजिक प्रतिरोध के एक व्यावहारिक और अमोघ अस्त्र के रूप में रूपांतरित कर दिया। [2]गांधीजी ने दिखाया कि बिना एक भी गोली चलाए, बिना किसी भौतिक हथियार के और बिना शत्रु के प्रति मन में कटुता रखे, दुनिया की सबसे बड़ी साम्राज्यवादी ताकत (ब्रिटिश साम्राज्य) को घुटनों पर लाया जा सकता है। सत्याग्रह का शाब्दिक अर्थ हैकृश्सत्य के लिए आग्रह करनाश। यह सत्य की शक्ति पर आधारित एक ऐसा नैतिक बल है जो विरोधी को परास्त करने के बजाय उसका हृदय परिवर्तन करने पर बल देता है। यह कमजोरों या कायरों का अस्त्र नहीं हैय इसके विपरीत, यह आत्मिक रूप से सुदृढ़, साहसी और अनुशासित व्यक्तियों का मार्ग है।[3]

मुख्य शब्द – सत्याग्रह, अहिंसा ,प्रासंगिकता, तीनकठिया प्रणाली ,जनमानस ,डिजिटल युग, डिजिटल सत्याग्रह।

प्रस्तावना

गांधीजी के अहिंसा और सत्याग्रह के दर्शन का निर्माण अचानक नहीं हुआ था। इसके पीछे पूर्वी और पश्चिमी दर्शन का एक गहरा समन्वय था। गांधीजी ने लियो टॉल्स्टॉय की पुस्तक श्द किंगडम ऑफ गॉड इज विदीन यू, जॉन रस्किन की अनटू दिस लास्ट और डेविड थोरो के सिविल डिसओबेडिएंस (सविनय अवज्ञा) के सिद्धांतों का गहन अध्ययन किया था। 4, इसके साथ ही, भारतीय दर्शन में श्रीमद्भगवद्गीता के निष्काम कर्मयोग ने उन्हें फल की चिंता किए बिना सत्य के मार्ग पर अडिग रहने की प्रेरणा दी।गांधीजी के दर्शन में सत्य और अहिंसा एक

ही सिक्के के दो पहलू हैं। उनका प्रसिद्ध कथन था कि सत्य ही ईश्वर है।5, यदि आपका उद्देश्य (साध्य) सत्य है, तो उसे प्राप्त करने के माध्यम (साधन) भी उतने ही पवित्र और अहिंसक होने चाहिए। साधन और साध्य की इसी अटूट पवित्रता के सिद्धांत ने सत्याग्रह को जन्म दिया।

सत्याग्रह और साधारण पैसिव रेजिस्टेंस (निष्क्रिय प्रतिरोध) में मूलभूत अंतर है। निष्क्रिय प्रतिरोध में कमजोरी या लाचारी के कारण हिंसा का प्रयोग नहीं किया जाता और मन में शत्रु के प्रति घृणा भाव हो सकता है। इसके विपरीत, सत्याग्रह में सत्याग्रही विरोधी से घृणा नहीं करता, बल्कि उसके द्वारा किए जा रहे अन्याय से लड़ता है। इसका उद्देश्य शत्रु को नष्ट करना नहीं, बल्कि उसकी सोई हुई अंतरात्मा और विवेक को जगाना है। [6] गांधीजी का मानना था कि आत्मा का बल शारीरिक बल से कहीं अधिक शक्तिशाली होता है और इसी आत्मिक बल ने भारतीय जनमानस को एक नई वैचारिक दिशा दी।

शोध का उद्देश्य

वर्तमान 21वीं सदी में, जब पूरी दुनिया तकनीकी रूप से अत्यंत समृद्ध हो चुकी है लेकिन नैतिक और आत्मिक मोर्चे पर पतन की ओर अग्रसर है, इन सिद्धांतों का पुनर्मूल्यांकन करना अनिवार्य हो जाता है। आज का युग परमाणु हथियारों की होड़, आंतरिक उग्रवाद, सामाजिक ध्रुवीकरण और डिजिटल मोर्चे पर वैचारिक हिंसा से जूझ रहा है। ऐसी विकट परिस्थितियों में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या एक सदी पुराने ये सिद्धांत आज के जटिल समाज में व्यावहारिक हैं? यह शोध पत्र इसी मूल प्रश्न का उत्तर तलाशने का एक अकादमिक प्रयास है। यह शोध पत्र न केवल इसके ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करता है, बल्कि समकालीन राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में इसकी निरंतरता और उपयोगिता का भी गहन विश्लेषण करता है।

शोध कार्यप्रणाली

इस शोध पत्र के वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पहलुओं को सुदृढ़ करने के लिए एक मिश्रित शोध पद्धति को अपनाया गया है। ऐतिहासिक तथ्यों और दार्शनिक सिद्धांतों की विवेचना के लिए प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों (गांधीजी के मूल लेख, अकादमिक पुस्तकें, और शोध पत्रिकाएं) का अध्ययन किया गया है।वर्तमान भारतीय जनमानस, विशेषकर आधुनिक युवा पीढ़ी पर अहिंसा और सत्याग्रह के प्रभाव तथा इसकी प्रासंगिकता को मापने के लिए एक प्राथमिक सर्वेक्षण आयोजित किया गया। इस सर्वेक्षण के तहत 100 उत्तरदाताओं का एक यादृच्छिक नमूना चुना गया, जिसमें छात्र, कामकाजी पेशेवर, शिक्षाविद और विभिन्न आयु वर्ग के लोग शामिल थे। डेटा संग्रह के लिए एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

भारतीय जनमानस पर प्रभाव

ब्रिटिश हुकूमत के दौरान भारतीय समाज अत्यधिक डरा हुआ, जातियों और धर्मों में विभाजित और एक गहरी हीनभावना से ग्रसित था। आम भारतीय यह मान चुका था कि ब्रिटिश साम्राज्य को हराना असंभव है। गांधीजी ने भारतीय जनमानस के इस मानस को बदलने के लिए अहिंसा और सत्याग्रह को अपनी प्रयोगशालाओं में आजमाया।

चंपारण सत्याग्रह (1917) भारत में सत्याग्रह की पहली प्रयोगशाला

पृष्ठभूमि और समस्या बिहार के चंपारण जिले में ब्रिटिश जमींदारों द्वारा तीनकठिया प्रणाली लागू की गई थी। इसके तहत प्रत्येक किसान को अपनी भूमि के (3/20) भाग पर नील (Indigo) की खेती करने के लिए कानूनी रूप से मजबूर किया जाता था। [7] बीसवीं सदी की शुरुआत में जब जर्मनी में सिंथेटिक (कृत्रिम) रंगों का आविष्कार हुआ, तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में नील की मांग घट गई। ब्रिटिश जमींदारों को घाटा होने लगा, जिसकी भरपाई उन्होंने गरीब किसानों पर अवैध कर और लगान बढ़ाकर करनी शुरू कर दी। किसान अत्यधिक भुखमरी और दमन के दौर से गुजर रहे थे।

सत्याग्रह का व्यावहारिक प्रयोग राजकुमार शुक्ल के निमंत्रण पर महात्मा गांधी अप्रैल 1917 में चंपारण पहुंचे। ब्रिटिश प्रशासन ने उन्हें अशांति फैलाने के आरोप में तुरंत जिला छोड़ने का सरकारी आदेश दिया। गांधीजी ने स्थापित कानूनी परंपराओं के विपरीत, इस आदेश को मानने से विनम्रतापूर्वक इनकार कर दिया और कहा कि वह अपने देशवासियों की पीड़ा सुनने आए हैं और इसके लिए जेल जाने को तैयार हैं। यह भारत की धरती पर सविनय अवज्ञा का पहला खुला और प्रत्यक्ष प्रदर्शन था। गांधीजी ने किसी भी प्रकार की हिंसा या उग्र भाषणों का सहारा नहीं लिया। उन्होंने अपने सहयोगियों (राजेंद्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा आदि) के साथ मिलकर हजारों किसानों के घरों का दौरा किया और उनके बयानों तथा समस्याओं का एक विस्तृत और वैज्ञानिक डेटा एकत्र किया। [8]

भारतीय जनमानस पर प्रभावरू चंपारण सत्याग्रह ने भारतीय किसानों और आम जनता को सदियों पुराने मानसिक डर से मुक्त कर दिया। पहली बार निर्धन और अनपढ़ किसानों ने देखा कि यदि वे सत्य के मार्ग पर संगठित रहें, तो दुनिया की सबसे शक्तिशाली सरकार को भी झुकना पड़ता है। ब्रिटिश सरकार को अंततः एक जांच समिति (Champaran Agrarian Committee) का गठन करना पड़ा, जिसमें गांधीजी को भी सदस्य बनाया गया। तीनकठिया प्रणाली को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया और वसूले गए अवैध धन का एक हिस्सा किसानों

को वापस मिला। चंपारण ने भारतीय राजनीति का रुख बदल दियाय इसने यह साबित कर दिया कि भारत की असली ताकत शहरों के बुद्धिजीवियों में नहीं, बल्कि गांवों के शोषित किसानों के आत्मबल में है।

दांडो यात्रा और नमक सत्याग्रह (1930) जन–आंदोलन का लोकतंत्रीकरण

ब्रिटिश सरकार ने जीवन के लिए सबसे अनिवार्य और बुनियादी वस्तु नमक पर भारी कर लगा दिया था। इसके साथ ही, भारत की तटीय जनता को स्वयं के उपभोग के लिए भी नमक बनाने की अनुमति नहीं थीय इस पर पूरी तरह ब्रिटिश सरकार का एकाधिकार था। नमक एक ऐसी वस्तु थी जिसका उपयोग अमीर–गरीब, हिंदू–मुस्लिम, सवर्ण–दलित सभी समान रूप से करते थे। गांधीजी ने इस सूक्ष्म लेकिन अत्यंत संवेदनशील मुद्दे को अपने अगले बड़े सत्याग्रह का केंद्र बिंदु चुना। [9] 12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी ने अपने 78 चुनिंदा स्वयंसेवकों के साथ साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से समुद्र तटीय गांव दांडी के लिए अपनी ऐतिहासिक पैदल यात्रा शुरू की। 24 दिनों की इस यात्रा में उन्होंने लगभग 241 मील की दूरी तय की। इस यात्रा के दौरान गांधीजी जिस भी गांव से गुजरते, वहां हजारों की संख्या में लोग उनके विचारों को सुनने आते। 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुंचकर गांधीजी ने समुद्र तट पर बिखरे नमक को हाथ में उठाकर प्रतीकात्मक रूप से ब्रिटिश कानून को भंग कर दिया। इसके बाद पूरे देश में नमक बनाने का सविनय अवज्ञा आंदोलन दावानल की तरह फैल गया।[10]

भारतीय जनमानस पर प्रभाव

दांडी यात्रा ने भारतीय जन–आंदोलन का पूरी तरह से लोकतंत्रीकरण कर दिया। इसने राष्ट्रवाद को केवल एक राजनीतिक विचार से ऊपर उठाकर आम जनमानस की दैनिक चेतना का हिस्सा बना दिया। इस आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें भारतीय महिलाओं की भागीदारी अभूतपूर्व स्तर पर देखी गई। कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी नेत्रियों से लेकर साधारण ग्रामीण महिलाओं ने शराब और विदेशी कपड़ों की दुकानों के आगे शांतिपूर्ण धरने दिए। [11] जब ब्रिटिश पुलिस ने सत्याग्रहियों पर लाठियां बरसाईं (जैसे धरासणा नमक कारखाने पर), तो सत्याग्रहियों ने बिना हाथ उठाए, बिना प्रतिशोध लिए उन लाठियों को सहा। इस नैतिक दृश्य ने पूरी दुनिया के मीडिया का ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया। दांडी मार्च ने सिद्ध कर दिया कि अहिंसक सत्याग्रह भौतिक रूप से शक्तिशाली दमनकारी को नैतिक रूप से पूरी तरह पराजित कर सकता है।

International Journal in Management and Social Science
Volume 14 Issue 03, March 2026 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

वैचारिक विमर्श महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. आंबेडकर की तुलना

भारतीय जनमानस के सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक उत्थान के मार्ग को लेकर 20वीं सदी के दो महानतम विचारकों महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. आंबेडकर के बीच गहरे और अत्यंत समृद्ध बौद्धिक मतभेद थे। इन दोनों महापुरुषों का अंतिम लक्ष्य भारतीय समाज से असमानता को मिटाना और शोषितों को न्याय दिलाना था, परंतु उनके साधन, दर्शन और प्राथमिकताओं में स्पष्ट भिन्नता थी, जिसका तुलनात्मक विश्लेषण नीचे दी गई तालिका और बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

वे आदर्श वर्ण व्यवस्था के समर्थक थे परंतु छुआछूत (अस्पृश्यता) के घोर विरोधी थे। वे इसे सनातनी हिंदू धर्म का एक विकार मानते थे जिसे सुधारना आवश्यक था। [12]वे जाति व्यवस्था को पूरी तरह नष्ट करना चाहते थे। उनका मानना था कि जब तक हिंदू धार्मिक ग्रंथों और वर्ण व्यवस्था को खारिज नहीं किया जाता, तब तक समानता असंभव है। [13] सुधार का मुख्य साधन हृदय परिवर्तन गांधीजी का मानना था कि उच्च जातियों के भीतर नैतिक चेतना और पश्चाताप की भावना जगाकर, आत्म–शुद्धि द्वारा सामाजिक समरसता लाई जा सकती है।

कानूनी और संवैधानिक मार्ग आंबेडकर का मानना था कि शोषकों के हृदय परिवर्तन पर निर्भर रहने के बजाय दलितों को वैधानिक संरक्षण, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और कड़े कानूनों की आवश्यकता है।वे ग्राम स्वराज के प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है और गांवों को आर्थिक व सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर होना चाहिए। [14]

शहर केंद्रितरू वे गांवों को स्थानीय कूपमंडूकता, क्रूरता, उत्पीड़न और जातिवाद का गढ़ मानते थे। उन्होंने दलितों को गांवों को छोड़कर शहरों की ओर जाने और आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

राजनैतिक प्रतिनिधित्व (पूना पैक्ट 1932) वे अछूतों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल (Separate Electorate) के विरोधी थे, क्योंकि उनका मानना था कि इससे दलित समाज हिंदू समाज से हमेशा के लिए कट जाएगा।वे पृथक निर्वाचक मंडल के समर्थक थे ताकि शोषित वर्ग को वास्तविक राजनीतिक सत्ता मिल सके और वे अपने प्रतिनिधियों को स्वयं चुन सकें। [15]उनका मानना था कि सत्याग्रह अन्याय के खिलाफ आत्मिक बल का प्रयोग है। यह किसी भी प्रकार के अन्याय (चाहे वह विदेशी शासन हो या आंतरिक सामाजिक बुराई) के खिलाफ सार्वभौमिक अस्त्र है।वे सामाजिक सुधारों के लिए शुरुआती दौर में सत्याग्रह (जैसे महाड़ तालाब सत्याग्रह 1927 या कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन) के समर्थक रहे, परंतु बाद में उनका झुकाव संवैधानिक अधिकारों और कानूनी सुधारों की तरफ अधिक हो गया।

वैचारिक भिन्नता का विस्तृत विश्लेषण

गांधीजी का दृष्टिकोण मुख्य रूप से धार्मिक, नैतिक और सुधारात्मक था। उन्होंने अछूत माने जाने वाले वर्ग को हरिजन (ईश्वर की संतान) नाम दिया और सवर्णों को यह समझाने का प्रयास किया कि अस्पृश्यता का पालन करना एक घोर पाप है। गांधीजी का मानना था कि यदि समाज का नैतिक उत्थान हो जाए, तो कानून की आवश्यकता स्वतः ही कम हो जाएगी।इसके विपरीत, डॉ. आंबेडकर का दृष्टिकोण आधुनिक, कानूनी, संरचनात्मक और अधिकारों पर आधारित था। वे स्वयं इस सामाजिक दंश को झेल चुके थे, इसलिए वे किसी नैतिक अपील या सवर्णों के हृदय परिवर्तन के भरोसे शोषितों के भविष्य को नहीं छोड़ना चाहते थे। उनका नारा था शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो।[16] उन्होंने स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता केवल अंग्रेजों से मुक्ति नहीं है, बल्कि समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति को सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता मिलना ही वास्तविक आजादी है।आज के परिप्रेक्ष्य में, इन दोनों विचारकों को एक–दूसरे का विरोधी मानने के बजाय एक–दूसरे का पूरक माना जाना चाहिए। गांधीजी ने जहां समाज को नैतिक रूप से तैयार किया और सामाजिक समरसता की जमीन तैयार की, वहीं डॉ. आंबेडकर ने उस जमीन पर एक मजबूत संवैधानिक और कानूनी ढांचा खड़ा किया जिसने भारत को एक जीवंत लोकतंत्र बनाया। [17]

वर्तमान समय में प्रासंगिकता

क्या परमाणु युग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और तीव्र वैचारिक ध्रुवीकरण वाले इस आधुनिक समाज में अहिंसा और सत्याग्रह आज भी प्रासंगिक हैं? इसका उत्तर सकारात्मक है। वर्तमान समय की जटिलतम वैश्विक और घरेलू समस्याओं के समाधान के रूप में इन सिद्धांतों की उपयोगिता निम्नलिखित रूपों में देखी जा सकती है

1 वैश्विक संघर्ष और युद्ध का विकल्प

वर्तमान में रूस–यूक्रेन युद्ध, मध्य–पूर्व (इजरायल–गाजा) संकट और विभिन्न महाशक्तियों के बीच परमाणु और साइबर हथियारों की होड़ ने पूरी मानव सभ्यता को विनाश के कगार पर ला खड़ा किया है। संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाएं भी इन युद्धों को रोकने में असमर्थ दिख रही हैं। ऐसी स्थिति में गांधीजी का यह शाश्वत कथन मानवता का मार्गदर्शन करता है आँख के बदले आँख का सिद्धांत पूरी दुनिया को अंधा बना देगा।[18] आधुनिक युग में युद्ध किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं है अंततः सभी पक्षों को शांतिपूर्ण संवाद, कूटनीति और अहिंसक समझौतों

की मेज पर ही आना पड़ता है। गांधीवादी अहिंसा आज कोई काल्पनिक आदर्श नहीं, बल्कि मानवता के अस्तित्व को बचाए रखने की एक अनिवार्य व्यावहारिक आवश्यकता है।

2 आधुनिक लोकतांत्रिक आंदोलन

21वीं सदी के लोकतंत्रों में जनता को जब भी सरकारों की जनविरोधी नीतियों का विरोध करना होता है, तो वे अनजाने में गांधीवादी सत्याग्रह के मार्ग को ही चुनते हैं। भारत में हुआ ऐतिहासिक शकिसान आंदोलनश (2020–21) इसका सबसे बड़ा जीवंत उदाहरण है। कड़ाके की ठंड, गर्मी और बरसात के बावजूद लाखों किसानों ने दिल्ली की सीमाओं पर महीनों तक बैठकर पूरी तरह शांतिपूर्ण और अनुशासित तरीके से विरोध प्रदर्शन किया और अंततः सरकार को कानून वापस लेने पड़े। इसी प्रकार, वर्ष 2011 में अन्ना हजारे के नेतृत्व में हुआ श्भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन (इंडिया अगेंस्ट करप्शन) पूरी तरह से गांधीवादी भूख हड़ताल और सत्याग्रह पर ही आधारित था। [19] यह सिद्ध करता है कि एक मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपनी बात मनवाने और सत्ता को जवाबदेह बनाने का सबसे पवित्र, प्रभावी और स्वीकृत माध्यम आज भी सत्याग्रह ही है।

3 पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास

आज पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं से त्रस्त है। इसका मुख्य कारण आधुनिक मनुष्य का अंधाधुंध उपभोक्तावाद और प्रकृति का हिंसक दोहन है। गांधीजी ने दशकों पहले सचेत करते हुए कहा थारू ष्धरती के पास हर मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन किसी एक व्यक्ति के लालच को पूरा करने के लिए नहीं।[20] प्रकृति के प्रति यह अहिंसक दृष्टिकोण आज वैश्विक मंचों पर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (सतत विकास) और क्लाइमेट जस्टिस के रूप में अपनाया जा रहा है। भारत का ऐतिहासिक श्चिपको आंदोलनश और नर्मदा बचाओ आंदोलन मूलतः पर्यावरण की रक्षा के लिए किए गए सत्याग्रह ही थे।

4 डिजिटल युग और डिजिटल सत्याग्रह

आधुनिक युग डिजिटल क्रांति का युग है, लेकिन इसके साथ ही इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर वैचारिक हिंसा, फेक न्यूज, हेट स्पीच (नफरती भाषण) और ट्रोलिंग की बाढ़ आ गई है। लोग वैचारिक असहमति होने पर एक–दूसरे के प्रति अपशब्दों और चरित्र हनन का

प्रयोग कर रहे हैं। इसे मानसिक और वैचारिक हिंसा कहा जा सकता है। ऐसे समय में युवाओं को भाषाई और वैचारिक अहिंसा की अत्यंत आवश्यकता है। इंटरनेट पर बिना किसी को गाली दिए, बिना सामाजिक वैमनस्य फैलाए, पूरी शालीनता, तथ्यों और सत्य के साथ अपनी असहमति दर्ज कराना ही आज के युग का डिजिटल सत्याग्रह है। [21,]

सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

नीचे दिए गए आंकड़े उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं के प्रतिशत वितरण को दर्शाते है

तालिका 1

क्या आज के जटिल और प्रतिस्पर्धी युग में अहिंसा का सिद्धांत व्यावहारिक है?

प्रतिक्रिया	**उत्तरदाताओं का प्रतिशत**
पूर्णतः व्यावहारिक है (हाँ)	45:
आंशिक रूप से व्यावहारिक है	40:
पूरी तरह व्यावहारिक नहीं है (नहीं)	15:

तालिका 2

लोकतंत्र में सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के लिए कौन सा मार्ग सबसे प्रभावी है?

विरोध का माध्यम	**उत्तरदाताओं का प्रतिशत**
गांधीवादी सत्याग्रह (शांतिपूर्ण आंदोलन, अनशन, धरना)	55:
कानूनी और संवैधानिक मार्ग (न्यायालय की शरण में जाना)	35:
आक्रामक या उग्र प्रदर्शन (रास्ता रोकना, बंद का आह्वान)	10:

तालिका 3

आधुनिक भारत की सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए किसके विचार अधिक प्रासंगिक हैं?

वैचारिक दृष्टिकोण उत्तरदाताओं का प्रतिशत

दोनों का सकारात्मक समन्वय अनिवार्य है 65:

केवल डॉ. आंबेडकर के कानूनी और संवैधानिक सुधार 20:

केवल महात्मा गांधी का नैतिक मार्ग (हृदय परिवर्तन) 15:

डेटा का विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

प्राथमिक आंकड़ों का गहन विश्लेषण करने पर कई महत्वपूर्ण और उत्साहजनक प्रवृत्तियां (ज्तमदके) सामने आती हैं

अहिंसा के प्रति सकारात्मकता

यद्यपि 15: लोगों का मानना है कि आज का युग अत्यंत क्रूर है और इसमें अहिंसा व्यावहारिक नहीं है, लेकिन 85: उत्तरदाता (45: पूर्णतः और 40: आंशिक रूप से) आज भी मानते हैं कि व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर अहिंसा का मार्ग ही समाज को बिखरने से बचा सकता है। लोकतांत्रिक विरोध प्रदर्शनों के संदर्भ में, 55: की बहुसंख्या आज भी मानती है कि शांतिपूर्ण सत्याग्रह ही जनता की आवाज को सत्ता तक पहुंचाने का सबसे मजबूत और नैतिक जरिया है। लोग उग्र प्रदर्शनों (मात्र 10:) को सिरे से खारिज करते हैं, जो यह दर्शाता है कि भारतीय जनमानस के अवचेतन में गांधीवादी आंदोलन की जड़ें आज भी कितनी गहरी हैं।सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष तालिका 3 से प्राप्त होता है। 65: युवाओं और बुद्धिजीवियों का स्पष्ट मानना है कि आधुनिक भारत के निर्माण के लिए गांधी और आंबेडकर को एक–दूसरे के विपरीत खड़ा करना एक वैचारिक भूल है। आज के समाज को यदि आगे बढ़ना है, तो उसे गांधी की आत्मिक शुद्धता, अहिंसा व नैतिक चेतना की भी आवश्यकता है और इसके साथ ही डॉ. आंबेडकर द्वारा प्रदत्त संवैधानिक अधिकारों, कानूनी संरक्षण व तार्किकता की भी उतनी ही जरूरत है। यह समन्वय ही भारत को एक न्यायपूर्ण और समृद्ध राष्ट्र बना सकता है।

चुनौतियाँ और आलोचनात्मक विश्लेषण

यद्यपि अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांत अत्यंत प्रभावशाली और नैतिक रूप से सुदृढ़ हैं, परंतु वर्तमान समकालीन परिस्थितियों में इनके व्यावहारिक क्रियान्वयन के समक्ष कई गंभीर चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, जिनका आलोचनात्मक विश्लेषण करना इस शोध पत्र की निष्पक्षता के लिए आवश्यक है।धैर्य की कमी और त्वरित परिणामों की चाहरू सत्याग्रह की पहली शर्त हैकृअसीम

धैर्य और कष्ट सहने की क्षमता। गांधीजी के आंदोलन महीनों और वर्षों चलते थे। परंतु आज की श्इंस्टेंटश (त्वरित) संस्कृति और उपभोक्तावादी पीढ़ी बहुत जल्दी परिणाम चाहती है। धैर्य की इसी कमी के कारण कभी–कभी शांतिपूर्ण आंदोलन बहुत जल्दी हिंसक रूप अख्तियार कर लेते हैं।राज्य का दमनकारी और परिष्कृत स्वरूप 20वीं सदी के ब्रिटिश साम्राज्य की तुलना में 21वीं सदी के आधुनिक राज्यों का स्वरूप अत्यधिक शक्तिशाली और तकनीकी रूप से परिष्कृत है। आज सरकारों के पास डिजिटल निगरानी ैनतअमपससंदबम), सोशल मीडिया पर नैरेटिव कंट्रोल और अत्याधुनिक सुरक्षा बल हैं। कई बार शांतिपूर्ण प्रदर्शनों को भी राष्ट्रविरोधी घोषित कर तकनीकी माध्यमों से दबा दिया जाता है, जिससे सत्याग्रहियों की नैतिक अपील जनता तक नहीं पहुंच पाती।

सत्याग्रह के प्रतीकों का राजनीतिकरण और दुरुपयोगरू वर्तमान समय में सत्याग्रह के मूल दर्शन का अवमूल्यन हुआ है। कई राजनीतिक दल या समूह अपने संकीर्ण, व्यक्तिगत या दलीय स्वार्थों की पूर्ति के लिए भूख हड़ताल या धरने को एक ब्लैकमेलिंग टूल (हथियार) की तरह इस्तेमाल करते हैं। यदि आंदोलन के पीछे सत्य और पवित्र साधन का अभाव हो, तो वह सत्याग्रह न रहकर केवल एक राजनीतिक पाखंड बनकर रह जाता है, जिससे आम जनता का इस दर्शन से विश्वास उठता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त संपूर्ण ऐतिहासिक, वैचारिक, केस स्टडी और प्राथमिक डेटा के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि अहिंसा और सत्याग्रह केवल स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के पन्नों में दफन कोई दस्तावेज नहीं हैं, बल्कि यह मानव जाति के सुरक्षित और सुनहरे भविष्य का एकमात्र जीवित रोडमैप हैं। भारतीय जनमानस की सांस्कृतिक और सामाजिक रगों में यह सिद्धांत इस कदर रच–बस चुके हैं कि आज भी भारत की धरती पर कोई भी बड़ा और स्थायी सामाजिक–राजनीतिक बदलाव बिना अहिंसा के संभव नहीं माना जाता।गांधीजी के इन विचारों की सार्वभौमिकता का प्रमाण है कि मार्टिन लूथर किंग जूनियर (अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन) से लेकर नेल्सन मंडेला (दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ संघर्ष) तक ने इसी भारतीय दर्शन को अपनाकर अपने देशों में युगांतकारी क्रांतियां कीं।

यद्यपि महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. आंबेडकर के रास्तों में वैचारिक भिन्नता थी, लेकिन दोनों का अंतिम ध्येय भारतीय जनमानस का सामाजिक और मानवीय उत्थान ही था। आधुनिक भारत को आज इन दोनों महापुरुषों के विचारों के समन्वय की आवश्यकता है। जब तक इस संसार में अन्याय, सामाजिक असमानता, युद्ध, घृणा और प्रकृति का शोषण रहेगा, तब तक महात्मा गांधी

के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांत प्रासंगिक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य रूप से मार्गदर्शक बने रहेंगे। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम इन्हें केवल अकादमिक भाषणों या स्मारकों तक सीमित न रखकर, अपने दैनिक आचरण, राजनीति, डिजिटल व्यवहार और समाज नीति का हिस्सा बनाएं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. गांधी, एम. के. (1927). सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 45.
2. कुमार, रवि (2015). गांधीवादी दर्शन और आधुनिक समाज. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 112.
3. बॉन्डुरेंट, जोन वी. (1965). कॉन्क्वेस्ट ऑफ वायलेंसरू द गांधियन फिलॉसफी ऑफ कॉन्फ्लिक्ट. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 23.
4. नेहरू, जवाहरलाल (1946). भारत की खोज (जेम क्पेबवअमतल व ि्दकपं). सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, पृष्ठ 310.
5. गांधी, एम. के. (1932). यरवदा मंदिर से. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 12.
6. सिंह, योगेंद्र (2002). आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृष्ठ 89.
7. मिश्र, गिरीश (1978). चंपारण सत्याग्रह का इतिहास. मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ 67–72.
8. प्रसाद, राजेंद्र (1957). चंपारण में महात्मा गांधी. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 105.
9. सरकार, सुमित (1983). आधुनिक भारतरू 1885–1947. मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ 280.
10. गांधी, एम. के. (1930). दांडी यात्रा के भाषण. नवजीवन प्रकाशन संग्रह।
11. थॉपर, रोमिला (2004). भारत का इतिहास. राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 420.
12. गांधी, एम. के. (1934). अस्पृश्यता निवारण और वर्ण व्यवस्था. हरिजन सेवक अंक।
13. आंबेडकर, बी. आर. (1936). जातिप्रथा का उच्छेद (।ददपीपसंजपवद व ि्बेंजम). गौतम बुक सेंटर, नई दिल्ली, पृष्ठ 55.
14. गांधी, एम. के. (1959). ग्राम स्वराज. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, पृष्ठ 5.

15. कीर, धनंजय (1954). डॉ. आंबेडकररू लाइफ एंड मिशन. पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई, पृष्ठ 142.
16. आंबेडकर, बी. आर. (1945). हू वर द शूदराज?. ठाकर एंड कंपनी, बॉम्बे, पृष्ठ 18.
17. शर्मा, रामविलास (1995). गांधी, अंबेडकर और भारतीय जनमानस. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 210.
18. कुमारप्पा, जे. सी. (1951). गांधीवादी अर्थशास्त्र और शांति. सर्व सेवा संघ प्रकाशन, पृष्ठ 92.
19. गुहा, रामचंद्र (2018). गांधीरू भारत से पहले और भारत के बाद. पेंगुइन बुक्स, पृष्ठ 560.
20. अग्रवाल, एस. एन. (1944). गांधीवादी योजना का आधार. किताबिस्तान, इलाहाबाद, पृष्ठ 34
21. मेहता, प्रताप भानु (2021). लोकतंत्र और वैचारिक अहिंसा की आवश्यकता. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 145.

❖